1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्ने वर्चस्विनं कृणु। अथर्व० 3/22/3
हे उन्नति साधक प्रभो ! मुझे तेजस्वी बनाएं।
O Lord ! The promoter of all ! Make me luminous and full of splendor.

वर्ष 38, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 मार्च, 2015 से रविवार 8 मार्च, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दयानन्द मठ रोहतक में सम्पन्न

गौ हत्या करने वालों पर धारा 302 के अंतर्गत चलेगा अभियोग : ओमप्रकाश धनखड़ कृषि मंत्री हरियाणा

वेदों के प्रचार और प्रसार के लिए ही किया था महर्षि दयानंद ने आर्य समाज का गठन : आचार्य बलदेव प्रधान सार्वदेशिक सभा

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को संबोधित करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं श्री प्रकाश आर्य मंत्री। सम्मेलन में पहुंचने पर महाशय धर्मपाल जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत करते हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजय पाल जी, सम्मेलन में उपस्थित आर्यजनों से भरा पंडाल।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में प्रांतीय आर्य महासम्मेलन का शुभारंभ यज्ञ से किया गया। दयानन्द मठ यज्ञशाला में यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा श्री सत्यवीर शास्त्री, प्रथम पाखंड खण्डन सम्मेलन की अध्यक्षता सभा प्रधान आचार्य विजयपाल जी, मुख्य अतिथि डॉ सुरेंद्र कुमार, कुलपति गुरूकुल कांगड़ी विश्व.

करौंथा कांड में आर्य समाजियों पर दर्ज केस होंगे खारिज : रामविलास शर्मा

विद्यालय हरिद्वार, मुख्य वक्ता डा॰ धर्मवीर कार्यकारी अध्यक्ष परोपकारी सभा अजमेर, संयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं॰ रामनिवास आर्य रहे। राष्ट्ररक्षा व राष्ट्रभाषा सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य बलदेव

अज्ञात एवं अंधविश्वास का नष्ट करने के लिए हरियाणा सभा द्वारा किए गए कार्य अविस्मृणीय– सुरेश चंद्र अग्रवाल

जी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, मुख्यातिथि श्री रामविलास शर्मा, शिक्षा मंत्री हरियाणा सरकार, मुख्य वक्ता श्री सुरेश. चंद्र अग्रवाल, उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रति. निधि सभा .....शेष पेज 5 पर

संस्था परिचय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से संचालित

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्: सर्वांगीण संस्कृत विकास योजना

संस्कृतकुलम् – आवश्यकता, उद्देश्य, व्यवस्था, लाभ एवं कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह में अंधेरे में दीप जलाने की प्रेरणा लेकर वैदिक संस्कृत शिक्षण का अनिवार्य दीपक प्रज्ज्वलित करने की योजना बनी जिसमें संस्कृत माध्यम से गुरुकुल शैशव से आरम्भ करने की आवश्यकता, उद्देश्य, व्यवस्था, लाभ एवं कार्यक्रम पर गहन विचार विमर्श हुआ और योजना :– केवल संस्कृत संस्था का स्वप्न ही नहीं, महर्षि दयानन्द की 'वेदो की ओर लौटो' धारणा को 'गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सानिध्य में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग द्वारा मूर्त्त रूप प्रदान किया गया। आगे चलकर यह उपक्रम महर्षि के मिशन का एक मील का पत्थर साबित होगा। –संपादक

सर्वोत्तम गुरु, सबके गुरु परमपिता परमात्मा ने वेद ज्ञान, प्रकृति दान और शरीर मान देकर समस्त संसार की

संस्कृतकुलम् में यज्ञ करते हुए ब्रह्मचारियों के साथ आचार्य धनंजय सपत्नीक, संस्कृतकुलम का निरीक्षण करते अधिकारीगण क्रमशः श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आ.प्र.स., श्री प्रकाश आर्य मंत्री सार्वदेशिक आ.प्र.स., श्री वी.के. मल्होत्रा प्रधान आर्य समाज हरिनगर।

सुखदायिनी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदायिनी, सर्वोन्नति प्रणयिनी संस्कृतमयी वेद विद्या का बहुमूल्य उपहार दिया और प्रकाशमयी विद्या की ओर प्रवृत होने का विधान किया। तब से विद्या–शिक्षा परम्परा आरंभ होकर अबाध गति से प्रवाहित होती चली आ रही है। ऋषियों, ...शेष पेज 4 पर

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
के तत्त्वावधान में
नव सम्वत्सर 2072 के अवसर पर

141 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 2072, तदनुसार
शनिवार , 21 मार्च, 2015
स्थान – ओपन एयर थियेटर तालकटोरा पार्क,
तालकटोरा स्टेडियम के पास नई दिल्ली 110001
समय– सायं 3:15 से 7.00 बजे
ऋषि मेला की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक वितरण
हजारों की संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

वेद स्वाध्याय

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जागृत कर दें

ऋषि–मधुच्छन्दाः।। **देवता** – अग्निः।। **छन्दः**–गायत्री।।

शब्दार्थ –अग्ने– हे परमात्मन्! **त्वम्**–तुम **यम्**–जिस **अध्वरं यज्ञम्** – कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**– सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्**–केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**– दिव्य फल लाता है।

विनय– हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारंभ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएं, परंतु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूंकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सब कुछ संपन्न होता है।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति। ऋ. 1.1.4.

तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारंभ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे उपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुंचता– सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएं तो हे प्रकाशक देव! हमारे अंतरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि 'हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा–रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुंचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है– सफल होता है।

सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

–आचार्य अभय देव

साभार–वैदिक विनय

पंडित लेखराम के जीवन के विषय में कुछ रोचक संस्मरण

प्रस्तुत लेख आर्य जगत् के महान बलिदानी पं. लेखराम आर्य मुसाफिर के जीवन से जुड़े संस्मरण जो आर्य समाज के इतिहास में एक बुनियाद के रूप में स्थापित है। जिनके द्वारा आर्य समाज के प्रति उनकी आस्था, उत्साह,त्याग एवं तपस्या का ज्ञान होता हैं, जिससे अनेक लोग उनसे प्रेरणा लेकर आर्य समाज के मिश्न. री के रूप देदीप्यमान हुए है। इसी उद्देश्य हेतु डॉ.विवेक आर्य द्वारा संकलित इस संस्मरण को उनके बलिदान दिवस 6 मार्च के परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है, पाठक वृन्द उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके कार्य को आगे बढ़ाएंगे। – सम्पादक

पंडित लेखराम के विषय में जितना अधिक मैं जानता जाता हूँ उतनी ही अधिक उन्हें जानने की मेरी इच्छा बलवती होती जाती हैं। पंडित जी के जीवन कुछ अलभ्य संस्मरण मुझे मिले जिन्हें मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१. आचार्य रामदेव जी की पंडित लेखराम जी से प्रथम भेंट : उन्हीं दिनों बच्छो वाली आर्य समाज के एक साप्ताहिक अधिवेशन में मैंने देखा कि एक हट्टा कट्टा रोबदार पंजाबी रौबदार जवान व्याख्यान देने के लिए समाज की वेदी पर आया। वह लुधियाना के कपड़े का बंद गले का कोट पहने था , परन्तु कोट के ऊपर वाले बटन खुले हुए थे। सर पर पगड़ी थी। उसका शमला बहुत लम्बा था। देखने में वह व्यक्ति पहलवान प्रतीत होता था। वेदी पर आते ही उसने व्याख्यान शुरू कर दिया। वह बड़ी ऊँची आवाज में और बड़ी जल्दी जल्दी बोलता था। अपने पास बैठे हुए एक महाशय से मैंने पूछा "यह कौन हैं ?" उसने आश्चर्य से यह उत्तर दिया। यह आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रचारक पंडित लेखराम जी हैं। मैं व्याख्यान सुनने लगा। सुनने क्या लगा, व्याख्यान ने मुझे अपनी तरफ आकृष्ट कर लिया। पंडित जी एक घंटा बोले। उनका भाषण सचमुच ज्ञान का भण्डार था। अपने व्याख्यान में उन्होंने इतने अधिक वेद मन्त्रों, फारसी अरबी के वाक्यों तथा यूरोपियन विद्वानों के प्रमाण और उद्धरण दिये कि मैं आश्चर्य चकित रह गया। मेरे दिल में आया यदि व्याख्याता बनना हो तो इसे आदर्श मानना चाहिए। मैंने सचमुच उन्हें अपना आदर्श बनाया। उस दिन के बाद से मैं जो

कुछ पढ़ता उसे जज्ब करने की कोशिश करता। पुस्तकों पर निशान लगाने की आदत भी मैंने उसी दिन से डाली। दस–बारह वर्षों के बाद पढ़े हुए उद्धरणों को मैं अपने रजिस्टर में लिखने लगा। आज इस प्रकार के रजिस्टर मेरे पास बहुत अधिक संख्या में हैं, और मैं इन्हें अमूल्य संपत्ति समझता हूँ।

२. पंडित जी की निर्भीकता : पंडित जी जहाँ एक ओर असाधारण विद्वान् थे वहां दूसरी ओर वे एक वीर शहीद की भांति निर्भीक और साहसी भी थे। मेरे एक मित्र ब्रह्मसमाज के नेता ने उनका नाम "आर्यसमाज का अली" रखा था। अपने विवाह के बाद एक दिन मैं लाला मुंशीराम जी के निवास स्थान पर बैठा था। उन दिनों वे लाला जी कहलाते थे। उसी समय पंडित लेखराम जी उनसे मिलने उनके घर आये। लाला मुंशीराम जी उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और पंडित लेखराम जी उस सभा के एक वैतनिक उपदेशक। आज आर्य समाज के अनेक अधिकारी आर्यसमाज के वास्तविक आजन्म सेवक को, जो असल में आर्यसमाज के प्राण हैं, केवल इसलिए सभा का वेतन भोगी सेवक समझते हैं क्योंकि अपना सम्पूर्ण समय आर्यसमाज की सेवा में व्यय कर देने के कारण उनके लिए सभा से आजीविका मात्र वृति लेना आवश्यक होता हैं, परन्तु उन दिनों यह बात न थी। प्रतिनिधि सभा उन दिनों उपदेशकों का मान करना जानती थी। यहाँ तक की सभा के अधिकारी प्रभावशाली प्रचारकों से चुपचाप डांट खाने में भी अपनी मानहानि नहीं समझते थे। जब पंडित लेखराम जी मकान पर आये तब प्रधान जी उठे और पंडितजी के उठने के बाद ही बैठे। नमस्कार आदि के बाद प्रधान जी ने कहा "सभा के कार्यालय से सूचना दी गई थी कि इस सप्ताह आप ..... नगर में प्रचार के लिये जाएंगे, परन्तु अब आपका प्रोग्राम बदल दिया हैं, अब आप ... जाएंगे। पंडित जी ने पूछा यह किसलिए ? प्रधान जी ने उत्तर दिया कि मुझे विश्वस्त सूत्र से विदित हुआ हैं कि ..... के मुस्लमान आपके प्राण लेने का कुचक्र रच रहे हैं। यदि आपक. ो अपने जीवन की चिंता नहीं तो मुझे तो उसकी चिंता करनी चाहिए न। न मालूम क्यों पंडित जी को क्रोध आ गया। वे असाधारण जोश में आकर बोले लाला जी, आप जैसे डरपोक यदि संस्था में बहुत अधिक बढ़ गये, तो आर्यसमाज का बेड़ा अवश्य डूब जायेगा। मैं मरने से नहीं डरता। अब तो मैं अवश्य ही वहीं जाऊँगा।

प्रधान जी तब भी मुस्कुरा रहे थे। इस बार उन्होंने नियंत्रण से काम लेना चाहा। उन्होंने कहा ,मैं सभा के प्रधान की हैसियत से आपका . .... जाना आवश्यक समझता हूँ, इसलिए मैंने आपका प्रोग्राम बदल दिया हैं। मेरी आपसे प्रार्थना हैं कि अब आप बताये हुए प्रोग्राम का ही अनुसरण करें। इस पर पंडित जी ने जरा नर्म आवाज में जवाब दिया, परन्तु उनकी जिद्द उसी तरह कायम थी। उन्होंने कहा मुझे मालूम हैं कि आपको मुझसे बहुत मोह हैं, उस मोह में कायरता पूर्ण वकालत मिलकर आप मुझे ...... न जाने के लिए बाधित करना चाहते हैं, परन्तु मैं यह स्पष्ट शब्दों में कह देता हूँ कि .....शेष पेज 6 पर

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुदित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

हम क्यों भटक रहे हैं?

शिव कुमार शास्त्री पूर्व सांसद

स्व. श्री शिव कुमार शास्त्री भारतीय लोकसभा के दो बार सांसद रहे थे। वे प्रसिद्ध नेता एवं संस्कृति के सुयोग्य विद्वान् थे। उनके द्वारा लिखित यह लेख सन् 1982 में गुरुकुल प्रभात आश्रम के 'दशाब्दी समारोह' में पर प्रकाशमान स्मृति ग्रन्थ से साभार उद्धृत है। यह लेख उस समय तो महत्त्वपूर्ण था परन्तु तीन दशकों के पश्चात् आज भी उतना ही प्रासांगिक है जो वर्तमान परिस्थिति तथा हमारी वैदिक (आर्य) सभ्यता के पश्चिमीकरण होने पर एक करारी चोट है। इस लेख को पुनः प्रकाशित करने का यही उद्देश्य है कि भारतीयों (आर्य) को अपनी सभ्यता और संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए, कम से कम अपनी सन्तति में तो वैदिकता का बीजारोपण करें, जिससे भारत अपने ऐतिहासिक गौरव को पुनः प्राप्त हो सके। तो आइए लेखक के उद्देश्य को सार्थक करें। —संपादक

अफ्रीका के हबशियों को जब अमेरिका की मण्डी में बेचने के लिए लाया जाता था। तब एक इंगलिश लेडी 'मिस स्टो' ने एक बूढ़े हबशी की जीवनी को 'अंकल टोम्स केबिन **(Uncle Tom's Cabin)** नाम की पुस्तक के रूप में लिखा। उसे इस पुस्तक के लिखने पर जेल का दण्ड मिला, पर अन्त में उसके विचार विजयी हुए और हबशियों का बेचना बन्द हुआ। इस पुस्तक में 'स्टो' ने कई बातें बहुत महत्त्वपूर्ण लिखी हैं। वह लिखती है कि ''जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत शीघ्र पनपती हैं, पहली तो यह कि उन लोगों को अपने पहले खान–पान, रहन–सहन, चाल–चलन और जीवन के सभी दूसरे मार्गों तथा साधनों से घृणा होने लगती है। दूसरी यह कि अपने मालिकों के खान–पान, रहन–सहन, चाल–ढाल, बोल–चाल तथा जीवन के सभी साधनों में रुचि बढ़ने लगती है। उनकी दासता जितनी पुरानी होती जाती है ये दोनों बातें उतनी गहरी स्थायी और सुदृढ़ होती जाती हैं। यदि इन दासों के लिए मालिकों की ओर से शिक्षा–दीक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया जाये तो वे लोग इस शिक्षा के माध्यम से अपने आपको यहाँ तक बदल डालते हैं कि चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। ये अपनी सत्ता को, अपने अतीत जीवन को, अपने पुराने गौरव को यहाँ तक कि अपने बाप–दादों को भी भूलकर अपने को प्रत्येक बात में अपने स्वामियों के जीवन में बदलने के लिए यत्नशील रहते हैं, किन्तु ऐसा दिन कभी नहीं आयेगा कि अपने मालि. कों के साथ एकम–एक कर सकें। जो बातें इस देवी ने अपने गम्भीर चिन्तन के पश्चात् लिखी हैं, उनकी यथार्थता को हम भारत के आज के ढर्रे को देखकर अनुभव कर सकते हैं। हमें भौतिक स्वातन्त्रय प्राप्त किए 35 वर्ष हो गए, 1 किन्तु मान. सिक दृष्टि से हम अब भी दास हैं, अपितु वास्तविकता के उद्घाटन के लिए यह कहना अधिक सार्थक होगा कि दासता के रोग का उभार हमारी भौतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् अधिक हुआ है। हम में अंग्रेजियत जितनी इन 35 वर्षों में बढ़ी है, उतनी पहले के 150 वर्षों में भी नहीं आयी। आज तथाकथित सुसंस्कृत और बड़े घरों में बच्चे जन्म से ही अंग्रेजी बोलते हैं। जितने अंग्रेजी के माध्यम वाले शिक्षणालयों की दुकान आज चमक रही है पहले कहाँ थी? इन स्कूलों में अपने बच्चों को केवल प्रवेश दिलाने के लिए ही अभिभावकों को महीनों दौड़–धूप करनी पड़ती है। हम कहाँ जा रहे हैं? हमारा क्या बनेगा? हमारी इस स्थिति को देखकर संसार के दूसरे देश हमारे विषय में क्या धारणा बनाते हैं? एक अमेरिकी पत्राकार श्री हैनरी सेंडर भारत में भ्रमण के लिए आये। भारत में भ्रमण करते हुए भारतीयों की स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, वह अमे. रिका में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध पत्र 'प्रौग्रैसिव' में उन्होंने लिखी। उनके लेख का अपेक्षित भाग इस प्रकार है 'अंग्रेजों के चले जाने के बाद भारत में 30 वर्षों में झण्डे के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं आया है। भारतीय आपस में एक दूसरे के साथ जिस तरह व्यवहार करते हैं, उनमें भी उनके औपनिवेशक मस्तिष्क की झलक मिलती है। जब वे किसी भारतीय से ही बात करते है तो धीरे–धीरे उनका वार्तालाप अंग्रेजी में बदल जाता है। शायद भारतीय यह भूलना ही नहीं चाहते कि उन्हें उनके अंग्रेज शासकों ने लिखाया–पढ़ाया है। एक भारतीय व्यवहार और आचरण में अपने को योरोपीय से घटकर ही मानता है। जब वह किसी योरोपीय के साथ बात करे या रहे तो वह अपने को योरोपीय नौकर–सा मानता है।

1. भारतीय हिन्दी में बात करना अपना अपमान समझते हैं।' यह है हमारे चिन्तन और व्यवहार की प्रतिक्रिया। हम भारतीयों के लिए इससे अधिक लज्जा की और कोई बात नहीं हो सकती। आश्चर्य तो यह है कि हमारे इन व्यवहारों के कारण विदेशों से हमारे राजनयिकों का अनेक बार अपमान भी हुआ, परन्तु हम हैं कि जो उस स्थिति को बदलने को उद्यत नहीं हैं। यह बड़ी प्रसिद्ध घटना हमारी स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक काल की है कि जब रूस में नियुक्त हमारे राजदूत ने अपने परिचय के कागजात अंग्रेजी में तैयार किये हुए प्रस्तुत किये तो रूस के अधिकारियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि पत्र भारत अथवा रूस की भाषा में ही लिखे जा सकते हैं। वस्तुतः बात यह है कि इस दास मनोवृत्ति के रोग का ठीक–ठीक निदान ही नहीं हुआ। जब तक रोग के कारण की तह तक न पहुंचा जाए तब तक उस पर की गई लीपा–पोती से कुछ बनने वाला नहीं है। ये रोग के कीटाणु हमारे बच्चों के मन और मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं उन्हें दी जाने वाली शिक्षा के माध्यम से। सुसंस्कृत घरानों में सारी शक्ति इस बात पर लग रही है कि उनका बच्चा जब पहले–पहले बोले तो अंग्रेजी में बोले। बड़े घरानों के छोटे–छोटे बालक जब फर्राटे से अंग्रेजी बोलते हैं तो उनके माता–पिता प्रसन्नता से गद्गद् हो जाते हैं और फिर आप आशा करते हैं कि उनमें स्वभाषा और संस्कृति के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत हो। वे तो यह धारणा बनाते हैं कि जो अंग्रेजी न पढ़ सकते और न ही बोल सकते वे पिछड़े हुए और असभ्य हैं। अतः इसमें सुधार के लिए आवश्यकता है कि शिक्षा के ढाँचे में आमूल–चूल परिवर्तन किया जाए। ये पब्लिक और कानवेन्ट स्कूल कठोरता से एक साथ समाप्त कर दिये जावें। ये अंग्रेजी के स्कूल और कॉलिज मैकाले ने भारतीयों को शिक्षित करने के लिए नहीं अपितु अंग्रेजों की भाषा समझकर भारतीयों पर शासन करने में सुविधा प्राप्त करने के लिए खोले थे। मैकाले के निम्न शब्द बहुत प्रसिद्ध हैं, इसलिए यहाँ उनका उद्धरण प्रासंगिकता को देखकर देना उचित ही होगा।

– We must do our best to form a class who may be interpreter between us and the millions whom we govern. A class of person Indian in blood and colour, but English in taste in opinions in morals and in intellect.

आश्चर्य है कि भारत के स्वाधीन होने पर प्रत्येक राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री ने वर्तमान शिक्षा के ढांचे को भारत के लिए अनुपयुक्त बताया, इसे बदलने की बात भी कही, किन्तु हम देखते हैं कि परिवर्तन कुछ नहीं हुआ अपितु दास मनोवृत्ति की जकड़ पहले से और कड़ी होती जा रही है। 'फलक के नीचे से हम तो कभी के निकल जाते, मगर रास्ता न पाया।' इस दिशा में लिखने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु लेख को सीमा में रखना भी आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। शारी. रिक उन्नति के साधन ब्रह्मचर्य, व्यायाम और प्राणायाम, आत्मिक उन्नति के लिए यम, नियमादि को अपनाना आवश्यक है। सांसारिक उन्नति के लिए शिल्प, व्यवसाय, वाणिज्यादि साधन हैं, किन्तु प्रच. लित प्रणाली से किसी एक उद्देश्य की पूर्ति भी तो नहीं होती। मोटे तौर पर इस पद्धति में

अग्रलिखित त्राुटियाँ हैं–

1. **सदाचार की कमी–** मानवता के शत्रु काम, क्रोधादि को जीतने की शिक्षा का सर्वथा अभाव है। गाली–गलौच करना, अभक्ष्य भक्षण करना, सिगरेट, मद्य पीना आदि कुकर्म तो यहाँ उत्तराधिकार में प्राप्त होते हैं।

2. **संस्कृति का अभाव–** पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थों में बी.ए. और एम. ए. तक जो विचार सामग्री विद्यार्थियों ने प्राप्त की है, उससे प्रभावित होना स्वाभाविक है, किन्तु ग्रन्थों में चाहे और जो कुछ हो पर आर्य–संस्कृति क्या है? यह उसमें नहीं है।

3. **ब्रह्मचर्य का अभाव–** ब्रह्मचर्य बिना गुरुओं के नियन्त्रण तथा सादे और तपोमय जीवन के बिना सम्भव नहीं है। उसका यहाँ सर्वथा अभाव है।

4. **दूषित नागरिक रहन–सहन में निवास–** चारों ओर सिनेमाओं की भरमार, सिनेमा कलाकारों के नाम और आकृतियों से बच्चा–बच्चा परिचित है, उस पर भी कोढ़ में खाज, घरों में टेलीविजन। तरंग में गुनगुनाने पर युवकों के मुख से कोई सिनेमा का गीत ही निकलेगा। किसी अच्छे कवि का भक्ति और देशोत्थान का गीत अपवाद की वस्तु है।

5. **सहशिक्षा–** प्राचीन मर्यादा थी कि बालक–बालिकाओं के विद्यालय पृथक्–पृथक् और दूर–दूर हों। लड़कियों की शिक्षा के लिए देवियाँ और बालकों को पढ़ाने के लिए पुरुष अध्यापक रहें। यह बहुत मनोवैज्ञानिक और दूरदर्शितापूर्ण पद्धति थी। प्रारम्भ में आर्यसमाज ने अपने शिक्षणालयों में यह दृढ़ता बरती भी, किन्तु समय का प्रभाव सब को बहा ले गया। **उर्दू के शायर अकबर के शब्दों में–**

'मयखानये रिफार्म की चिकनी जमीन पै।
वाहज का खानदान आखिर फिसल गया।।'

6. **सांस्कृतिक कार्यक्रम–** सांकृतिक कार्यक्रम के नाम पर असांस्कृतिक नृत्य, अभिनय आज के मन्त्रियों के सम्मान में हमारे बालक–बालिकाएं नाचने और गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और मन्त्रीजी प्रसन्न मुद्रा में उनकी सराहना करते हैं। यहाँ तो कुएं में भांग पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

.....शेष पेज 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

गुरु विरजानन्द ...

मुनियों, महात्माओं, राजाओं और प्रजाओं में संव्याप्त यही विद्या गुरु विरजानंद के माध्यम से महर्षि दयानंद स्वामी श्रद्धानंद आदि में भी विकसित हुई। इसी क्रम में एक महान गौरवशाली कदम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से आर्य दानवीर भामाशाह विश्व. विख्यात् व्यक्तित्व महाशय धर्मपाल (**M.D.H.**) के कर कमला. `से गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम् की स्थापना हुई।

'गुरु विरजानंद संस्कृत कुलम' का संचालन दिल्ली आर्य प्रति. निधि सभा द्वारा तथा आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से हो रहा है। संस्कृत विषय का अध्यापन आचार्य धनञ्जय 'जातवेदा' के आचार्यत्व में हो रहा है। ब्रह्मचर्य तप, संध्या–यज्ञ एवं संस्कृत परंपरा पर विशेष बल दिया जा रहा है। 24 घंटे सभी विद्यार्थी संस्कृत में ही वार्तालाप करते है तथा माता पिता एवं आगन्तुकों के साथ भी संस्कृत में ही व्यवहार करते है। यही कारण रहा कि यह संस्था अत्यल्प समय में इतनी लोकप्रिय हो रही है कि दानी महानुभावों ने सभी ब्रह्मचारियों को प्रतिमास आजीवन सहयोग देने को संकल्पित है। गुरुकुल की सभी व्यवस्थाओं का धीरे–धीरे विस्तार हो रहा है।

गुरुकुल स्थापना की भावना का उदय – स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धांतों का अक्षरशः पालन करने वाले श्री विनय आर्य जी अपने 36 गढ़प्रान्त प्रवास में आर्य प्रतिनिधि सभा के पत्र 'अग्निदूत में कार्यकारी सम्पादक आचार्य धनंजय शास्त्री 'जातवेदा' से वार्तालाप हुई तो आचार्य जी के संस्कृत वार्तालाप पारिवारिक संस्कृतमय वातावरण एवं उनके संस्कृत प्रचार के कार्यक्रमों से इतने प्रभावित हुए कि एक संस्कृत शिक्षणा संस्था का स्वप्न आंखों में बसा लाए।

पूर्णतः निःशुल्क प्रकल्प – दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा ने प्रा. चीन गुरुकुलीय प्रणाालीी का अनुसरण करते हुए ब्रह्मचारियों एवं आचार्यों के लिए पूर्णतः निःशुल्क रखा है। जिसमें वैदिक वाङ्मय एवं अन्य विषयों का अध्ययन, वस्त्र भोजन, आवास एवं शिक्षण सामग्री सब कुछ निःशुल्क रखा गया है । सम्भवतः आगामी विस्तार की योजनाओं का ब्यौरा इस प्रकार है :– 1. अतिथि भवन का निर्माण, 2. आचार्योत्तर कर्मचारी हेतु आवास, 3. संस्कृत विज्ञान प्रयोगशाला, 4 व्यवस्थित कार्यालय, 5 धनुर्वेदशाला, 6 संस्कृत पुस्तक प्रकाशन, 7 क्रीडा स्थल आदि।

अन्तः परिवेश :– सर्वश्री आचार्य धनञ्जय शास्त्री 'जातवेदाः' संस्कृत के मर्मज्ञ एवं संस्कृत के लिए समर्पित एक आदर्श महानुभाव हैं। संस्कृतमय परिवेश में ही इनका नौनिहाल एवं विद्यार्थी जीवन पला बढ़ा। वक्तृत्व के धनी आचार्य जी को धर्मपत्नी भी संस्कृत सम्भाषण में कुशल विदुषी हैं। इनके परिवार में बालक, माता–पिता, भाई–बहन, दामाद, पुत्र वधू सभी संस्कृत भाषी हैं।

गतिविधियां – संस्कृत कुलम् में वर्तमान में 10 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं जो प्रातः काल 4:00 बजे जागरण और रात्रि 10 बजे शयन पूर्व तक सभी भाषीय संक्रियाएं संस्कृत में होती है। जागरण पश्चात्– शौच, दन्तधावन, शारीरिक स्वस्थता हेतु व्यायाम–आसन प्राणायाम स्नान श्वेत वस्त्रधारण, संध्या वन्दन एवं अग्नि होत्र प्रातः राश पुनः अध्ययन में रत हो जाते है।

मध्याह्न 12:00 बजे भोजन विश्राम के पश्चात् अध्ययन सायं कालीन कक्षा। क्रीडा काल आसन–व्यायाम–प्राणायाम संध्या वन्दन रात्रि भोजन–भ्रमण एवं अध्ययन पश्चात् रात्रिकालीन प्रार्थना आचार्य को प्रणाम कर शयन कक्ष में पहुंच शयन करते हैं। इस प्रकार दैनिक तप युक्त दिनचर्या में रहकर वटुगण अध्ययनरत हैं। माता–पिता से मिलने का अवसर उन्हें केवल वार्षिकोत्सव पर प्राप्त होता है। संस्कृत सम्भाषण के साथ–आर्ष ग्रन्थों का पठन–पाठन, गायत्री जप, संध्या – यज्ञ व योगाभ्यास आदि कराया जाता है। यहॉं पर उपस्थित एक समृद्ध पुस्तकालय का लाभ भी वटुगण प्राप्त कर रहे हैं। संगणक के माध्यम से भी शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध हैं जिसमें दृश्य–श्रव्य उपकरण संस्कृत सी॰डी॰ और डी॰वी॰डी॰ आदि के माध्यम से उन्नत कक्षा हेतु प्रोजेक्ट की व्यवस्था भी उपलब्ध है।

साप्ताहिक संस्कृत कक्षाऍं :– संस्कृत कुलम् में बाहरी विद्यार्थियों को संस्कृत सीखने, बोलने हेतु रविवारीय कक्षाऍं नियमित रूप से चलाई जा रही हैं जिसमें गुरुकुल परिवेश से बाहर के छात्र आते है।

प्रथम वार्षिकोत्सव : 'गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् ' का गत माह प्रथम वार्षिकोत्सव देश–विदेश के अभ्यागतों, दिल्ली क्षेत्र के समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों, गुरुकुलों के आचार्य महानुभावों तथा अन्य विद्वान् एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस विशाल जन समूह के मध्य में ब्रह्मचारियों ने भवती भिक्षां ददातु। भवान् भिक्षां ददातु वाक्य उच्चारण कर सबको आश्चर्य चकित कर दिया। ये संस्कार ही संस्कृत के द्योतक है। संस्कार पूर्ण रूप से संस्कृत देववाणी से युक्त रहा। इस अवसर पर संस्कृत कुलम् की ओर से 'एक सप्ताह में सीखें संस्कृत' पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

संस्कृत गुरुकुल की आवश्यकता : जैसे–जैसे विश्व विज्ञान की ओर आगे बढ़ रहा है वैसे–वैसे संस्कृत के प्रति सबका ध्यान बढ़ता जा रहा है। नासा के वैज्ञानिक सुपर कम्प्यूटर (परम) के लिए संस्कृत को पूर्ण योग्य बता रहे हैं अतः यदि बाल्यावस्था से संस्कृत का मौलिक ज्ञान सारे विश्व को दिया जाए तो नासा की आवश्यकता की पृष्ठभूमि निर्मित होती जाएगी। अमेरिका, फ्रांस, इंगलैण्ड, जापान, रूस आदि ने इसमें कदम बढ़ा दिया है।

शिशु बिहार पांडिचेरी सरस्वती शिशु मन्दिर, बालकेन्द्रम बंगलौर आदि बाल शिक्षा में संस्कृत की शुरूआत कर चुके हैं। संस्कृत शिक्षण की आवश्यकता को वे अन्य भाषाओं के समान ही समझ रहे हैं। सृष्टि के आदि से महाभारतोत्तर काल तक इस भाषा की आवश्यकता में प्रश्न चिह्न नहीं था। अतः अब क्यों? दुनिया की हरेक भाषा को बचपन प्राप्त है किन्तु हमारी अपनी सनातन भाषा संस्कृत भाषा मनुष्यों के मुख नहीं चढ़ पा रही है। अनेक कारण संस्कृत के निवारण में लगे हैं। हमें वेद और संस्कृत की रक्षा करनी है तो इसे आ–बाल–वृद्ध –वनिता–परिजन आश्रय देना पड़ेगा। विश्वभर में संस्कृत की वैज्ञानिकता और विशेषता पर अनेक विद्वान संलग्न है। प्राचीन भारत में मानव में साथ जन्मी यह भाषा मानव का साथ क्यों छोड़ रही है। यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। पशु, पक्षियों, जीव–जन्तुओं की स्वभाविक भाषा की तरह मानवों की वास्तविक, सहज पूर्ण एवं पूर्व प्राप्त भाषा संस्कृत है। अतः आप सभी का सहयोग सदा बना रहे। भारत, जगद्‌गुरु संस्कृत, विश्वभाषा तथा वेद, जगत् का विषय बने।

संस्कृत क्यों आवश्यक है : 1. इसलिए की यह संस्कृति और संस्कार की जननी है। यह आद्यभाषा है। विश्व के आदि ज्ञान स्रोत वेदों की भाषा है। 2. संस्कृत में चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद है जो प्राकृतिक स्वास्थ्य विज्ञान प्रदान करता है। स्वयं स्वस्थ कैसे रहें, यह आयुर्वेद बताता है। 3.योग का तात्त्विक–ज्ञान प्राप्त करने हेतु भी संस्कृत योगदर्शन और व्यासभाष्य की आवश्यकता है। 4. विश्व में जहां भी जो भी ज्ञान है उसका मूल संस्कृत में (वेद में) विद्यमान है। अर्थात् चौसठ कलाएं, अनन्त विद्याएं संस्कृत में हैं। 5. जैसे भोजन में अनेक द्रव्य आवश्यक होते हैं वैसे ही संस्कृत भी अन्य भाषाओं की तरह आवश्यक है। 6. आज भी मनुष्य सर्वज्ञ नहीं है उसे बहुत कुछ जानना बचा है उसमें संस्कृत भी एक है। अन्य भाषाओं की तरह संस्कृत भी संविधान में मान्यता प्राप्त है, किन्तु इसकी सेवा सुश्रूषा में कमी होने से यह कमजोर होकर क्षीण, निर्जीव होती जा रही है। आर्य समाज के उद्देश्य के अनुकूल होने से संस्कृत की रक्षा सब आर्यों का परम धर्म है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की त्रिवेणी संस्कृत ने बहाई है। अतः महर्षि दयानन्द ने संस्कृत पढ़ना सब मनुष्यों के लिए अनिवार्य बताया है। 7. संस्कृत में यान्त्रिक, गणित, विज्ञान, पर्यावरण, मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, राजनीति, प्रशासन, चिकित्सा, शिल्प, संगीत आदि का विस्तृत ज्ञान भरा हुआ है। 8. संस्कृत मानव मात्र के लिए परम आवश्यक है क्योंकि विश्व मानवता का आदि उद्‌घोष इसमें किया है। संसार में शान्ति, सुख, सौभाग्य, आरोग्य, भोग्य, सौन्दर्य, शब्दार्थ सम्बन्ध विज्ञान देने वाली यही संस्कृत है।

उद्देश्य :– इस गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम् का उद्देश्य इस प्रकार है। 1. संस्कृत भाषा के साथ वेदों एवं वैदिक आर्ष विद्या की शिक्षा, अनुसंधान प्रयोग द्वारा रक्षा करना। 2. संस्कृत द्वारा शारी. रिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति की रूप रेखा निर्माण करना। 3. सभी भारतीय भाषाआ. `और अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के मूल शब्दों के साथ सर्वबोधगम्य संस्कृत शिक्षण विधि तैयार करना। 4. अपनों के प्रति जो कर्त्तव्य होता है वही संस्कृत के प्रति भी है क्योंकि संस्कृत अपनी भाषा है। 5. नवीन ज्ञान विज्ञान के साथ संस्कृत को जोड़ना और आगे बढ़ाना तथा आवश्यकता एवं उद्देश्य की पूर्ति के अनुकूल बनाना। 6. संस्कृत माध्यम से अन्य भाषाओं को सिखाने का एक अद्भुत और वैज्ञानिक प्रयास करना। 7. उड़िया बोलने वाला उड़ीसा का होता है, कन्नड़ बोलने वाला कर्नाटक का, पंजाबी बोलने वाला पंजाब का, उर्दू बोलने वाला पाकिस्तानी, अंग्रेजी ...शेष पेज 5 पर

आर्य प्रतिनिधि ...

नई दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ॰ राजेंद्र विद्यालंकार, श्री विनय आर्य, महामंत्री दि॰आ॰प्र॰ सभा व आचार्य सनत कुमार मुख्य रूप से उपस्थित रहे तथा संयोजक मा॰ रामपाल आर्य सभामंत्री एवं भजनोपदेशिका बहन अंजलि आर्या रहीं। इस सम्मेलन के आकर्षण रहे एम डी एच के मालिक और आर्य जगत के दानवीर महाशय धर्मपाल जिन्होंने आज वेदप्रचार रथ को आर्यजनता को समर्पित किया। आधुनिक उपकरणों द्वारा 24 लाखरूपए की लागत से बना वेदप्रचार रथ सभा की शोभा बढ़ा रहा था।

तीसरे गोरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य योगेंद्र आर्य, मुख्यातिथि श्री ओमप्रकाश धनखड़ कृषि, पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री, मुख्यवक्ता आचार्य देवव्रत प्राचार्य गुरूकुल कुरूक्षेत्र, भजनोपदेशक रोकी मित्तल तथा संयोजक आचार्य सर्वमित्र आर्य रहे। आर्य नर–नारी भारी उत्साह से सम्मेलन में शामिल हुए। पहली बार आर्यों के सम्मेलन में इतनी भारी संख्या में युवक तथा युवतियों ने भाग लिया। आचार्य बलदेव जी ने आज इस सम्मेलन के माध्यम से संदेश दिया कि ऋषि दयानंद ने आर्य समाज का गठन वेदों के प्रचार और प्रसार के लिए किया था।

आओ, आर्यों! पुनः वेदों की ओर लौटो। इस अभियान में तन–मन–धन से सहयोग करें ताकि ऋषि का स्वप्न साकार हो सके। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय आर्य महासम्मेलन दयानंद मठ रोहतक में राष्ट्र रक्षा व राष्ट्र भाषा सम्मेलन में मुख्यातिथि के रूप में पहुंचे प्रदेश के शिक्षा मंत्री माननीय श्री रामविलास शर्मा ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना कर के महर्षि दयानंद सरस्वती ने विश्व की जनता पर महान उपकार किया है। करौंथा में आर्य समाज के आंदोलन की चर्चा करते हुए कहा कि करौंथा कांड में आर्य समाजियों पर दर्ज किए गए जो मुकदमें हैं वे सभी प्रमुखता से खारिज किए जाएंगे और जितना भी कर्ज आर्य समाज पर है उसे खारिज किया जाएगा और यह घोषणा भी की कि राज्य की संस्कृत विषय की परीक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त किया जाएगा। प्रांतीय आर्य महासम्मेलन के गोरक्षा सम्मेलन में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हरियाणा प्रदेश के कृषि मंत्री माननीय श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी ने मानव जीवन के लिए गाय की उपयोगिता के विषय में बताया और गाय की सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए आर्य समाज की भूमिका को सराहा। उन्होंने कहा कि सूबे में गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए सख्त कानून बनाया जाएगा और प्रदेश में गाय की हत्या करने वाले व्यक्ति पर धारा 302 के अंतर्गत अभियोग चलाया जाएगा। गाय के दूध से बने उत्पादों की ब्रिकी पर जोर दिया।

गाय की डेयरी खोलने के लिए सरकार की ओर से सब्सिडी दी जाएगी। पाखंड खंडन सम्मेलन के मुख्यातिथि डा॰ सुरेंद्र कुमार, गुरूकुल कांगडी विवि हरिद्वार ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने हरिद्वार में पाखंड–खंडनी पताका फहराकर, पाखंड के खंडन की शुरूआत की और संसार के सामने 'सत्यार्थ–प्रकाश' के माध्यम से सत्य अर्थ का प्रकाश किया, वेदों की सार्व भौमिकता को सिद्ध किया और यह भी सिद्ध किया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इसलिए हमें इन आदर्शों का पालन करना चाहिए। प्रांतीय आर्य महासम्मेलन के विभिन्न समारोह में संपूर्ण देश के विभिन्न स्थानों से आए विद्वानों संन्यासियों एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं से वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सम्मेलन को संबोधित किया जिनमें महाशय धर्मपाल एमडीएच प्रधान आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली ने वेद

प्रचार वाहन का लोकार्पण किया और आशीर्वाद स्वरूप घर–घर वेद की ज्योति जलाने का संदेश दिया। मुख्य वक्ता के रूप में श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि अज्ञान एवं अन्धविश्वास को नष्ट कर सत्य ज्ञान का प्रकाश कर मानव मात्र की उन्नति के लिए कार्य करना आर्य समाज का प्रमुख उद्देश्य है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने जो कार्य किया है वह अविस्मरणीय है। इसलिए हमें हरियाणा सभा से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के विस्तार के लिए पुरुषार्थ करना है। श्री प्रकाश आर्य मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास एवं अनेक कुरीतियों का विरोध किया और वैदिक परम्परा आर्य समाज के माध्यम से पुनः प्रारंभ किया। इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि श्रेष्ठ आर्य परम्पराओं को स्वीकार करें और इनके प्रचार प्रसार के लिए योगदान दें। श्री विनय आर्य महामन्त्री दि॰ आर्य॰ प्र॰ सभा ने अपने उद्बोधन में कहा कि –आर्य प्रतिनिधि सभा अपने वेद, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार के लिए अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। आज हम महर्षि के मन्तव्यों को घर–घर पहुँचाने के लिए समाज सेवा के कार्य करें, अपनी सन्तति को यज्ञादि कार्यो से जोड़े, उन्हे वैदिक बाल साहित्य प्रदान कर हम इन कार्यों को और गति प्रदान कर सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रचार–प्रसार के लिए किया था– आर्य समाज का गठन

आ॰ बलदेव

पृष्ठ 4 का शेष

बोलने वाला बहुउद्देशीय किन्तु संस्कृत के अध्येता और ज्ञाता संपूर्ण विश्व में विद्यमान है। 8. भाषात्मक प्रतिस्पर्धा में संस्कृत को कर्त्तव्य भाव से आगे लाना। 9. शिष्टाचार, सदाचार, व्यवहार, आचार, विचार, भोजन, आच्छादन आदि में सात्विकता का संयोजन, जिससे, काम, क्रोध, लोभ अहंकार, मोह, अन्ध विश्वास और अन्धश्रद्धा के कारण जो अवांछनीय परिस्थिति बन रही है। उसका निराकरण हो सके। 10. वेद मंत्रों में पढ़े गए शिशु और तत्समानार्थक शब्दों तथा वैदिक वाङ्मय में पठित शिशु विषयक उपलब्ध सामग्री एवं वर्त्तमान शिक्षाविदों द्वारा अधीन विषयों का समावेश।

अभी तक क्या व्यवस्था है : गुरू विरजानंद संस्कृतकुलम् में कुछ आधारभूत व्यवस्थाओं के अंतर्गत शिक्षण कार्य संचालित किया जा रहा है। जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं :– 1. भवन एवं प्रांगण उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध है। अपितु आगामी गतिविधियों के अनुरूप कुछ अपेक्षाएं बनी रहती हैं। 2. वटुओं के लिए पाठ्य पुस्तकों की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में है किन्तु व्यवस्थित क्रम अपेक्षित है। 3. शिक्षण हेतू विद्यार्थियों की निरंतर कक्षा उन्नति की व्यवस्थानुसार शिक्षण सामग्री की न्यूनता प्रकट होती है, जिसे परिस्थित के अनुसार पूरा किया जाता रहा है। स्थान की व्यवस्था है। 4. स्थान की व्यवस्था पर्याप्त मात्रा में है अपितु आगामी योजनाओं के अनुसार विभिन्न विभागों के अंतर्गत उपयुक्त भवन की अपेक्षा की जाती है। 5. अभ्यास पुस्तिका, लेखनी, अङ्कनी, आसन पट्टिका आदि की व्यवस्था है। 6. गुरूकुल में शिक्षण हेतु अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जिसमें एक कम्प्यूटर, एक प्रोजैक्टर, पुस्तक आदि के रख–रखाव हेतु विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त अलमारियों की व्यवस्था भी की गई है। 7. विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकाल में पीने योग्य शीतल जल की व्यवस्था हेतु फ्रीज तथा कपड़े धोने के लिए वाशिंग मशीन, प्रेस, कूलर आदि की व्यवस्थाएं दानी महानुभावों की ओर से की गई हैं।

संभावित लाभ : 1. बालकों का सर्वांगीण विकास। 2. संरक्षित, सुरक्षित, स्वतन्त्र, प्रफुलित जीवन, स्वावलम्बन। 3. आर्ष वाङ्मय के ज्ञाता वैदिक विद्वानों का निर्माण।

बच्चों का भविष्य : 1. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता अपने आप है किन्तु शिशुओं, किशोरा. का भाग्य निर्माता मनुष्य है। इस दृष्टि से वर्तमान स्वीकार्य जीवन क्रम उन्नति में अग्रसर रहेंगे। 2. शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में अग्रसर रहेंगे।

कार्यक्रम : वर्तमान में तीन प्रकार का शिक्षण चलेगा।

1. आवासीय शिक्षण जो बालक संस्कृतकुलम् में नियतक्रम से पढ़ेंगे उनकी व्यवस्था। 2. **रविवासरीय शिक्षण**–इसमें जो बालक–बालिकाएं घर से सप्ताह में एक दिन आकर सीखेंगे। 3. **सामाजिक शिविर**–अवकाश के समय सप्ताह या दस दिन का शिविर आयोजित किया जाएगा।

सम्पादक

पंडित लेखराम ... अब तो जरुर वहीं जाऊँगा। यदि आप मुझे सभा की तरफ से नहीं भेजेंगे तो मैं अवैतनिक अवकाश लेकर अपने किराये से वहाँ जाऊँगा। मुझे स्मरण है की उन दिनों पंडित जी सभा से केवल ५० रुपये मासिक वेतन पाते थे। प्रधान जी भला उनकी इस निर्भीक घोषणा का क्या जवाब देते? उन्होंने केवल इतना ही कहा। आप जहां चाहे जा सकते हैं अब मैं आपको किसी भी बात के लिए बाधित नहीं करूंगा। सचमुच हमारी सभा का यह सौभाग्य हैं कि आप जैसे वीर पुरुष की सेवा उसे प्राप्त है।

३. पंडित जी का विपक्षी के साथ व्यवहार : एक दिन लाहौर की सनातन धर्म सभा में किसी सनातनी पंडित का व्याख्यान था। मैं भी यह व्याख्यान सुनने गया था। वह व्याख्यान मैंने बड़े ध्यान से सुना था और उसका सार मुझे याद हो गया था। भाषण सुनने के बाद घर की तरफ लौटते हुए राह में अचानक पंडित लेखराम जी से मुलाकात हो गई। वे मेरा नाम जानते थे। उन्होंने मुझसे पूछा कहां से आ रहे हो। मैंने कहा सनातन धर्म सभा के भवन से। उन्होंने पूछा, वहां क्या करने गये थे? मैंने उत्तर दिया ,व्याख्यान सुनने। पंडित जी ने पूछा ,व्याख्यान में क्या क्या बातें सुनी? मैंने उस भाषण का सारांश पंडित जी को सुना दिया। पंडित जी ने मेरी पीठ पर हाथ रखकर मुझे शाबाशी दी और कहा, शाबाश क्यों प्रत्येक चीज को इसी तरह ध्यान से सुना करो। मैंने पूछा, क्या इस व्याख्यान की बातें ठीक हैं? पंडित जी ने एकदम उत्तर नहीं दिया और कहा, मेरे यहां आना, मैं तुम्हें इन सभी बातों का विस्तृत उत्तर दूंगा। पंडित लेखराम जी सचमुच अपने विश्वास के इतने ही पक्के थे। उन्हें कभी यह आशंका नहीं होती थी कि मेरे विचारों में कभी कोई अशुद्धि या भ्रान्ति भी हो सकती है। अपने विपक्षियों की बातें तो वे बड़ी सभ्यता और शांति से सुनते थे, परन्तु उनके दिल में तो यही होता था कि यह व्यक्ति गुमराह और अशुद्ध विचारों का हैं।

(सन्दर्भ– ग्रन्थ विशाल भारत मासिक जनवरी–जून अंक १६३० पृष्ठ संख्या २१४–२१६)

४. पंडित लेखराम जी की सिंह गर्जना : एक बार अपने बलिदान से ३,४ वर्ष पूर्व पंडित लेखराम जी आर्य समाज लुधियाना में प्रचार के लिये पधारे। इस अवसर पर बाहर से आये हुए अन्य महानुभाव भी पधारे थे। लुधियाना का यह पहला ही अवसर था कि पंडित लेखराम जी ने इस्लाम के खंडन पर समाज द्वारा खुला व्याख्यान देने की घोषणा की थी। व्याख्यान से 15, 20 मिनट पहले पंडित लेखराम जी के पेट में ऐसा सख्त दर्द उठा कि उनको उत्सव मंडप छोड़ना पड़ा। उस समय कई डॉक्टर पंडित लेखराम जी की चिकित्सार्थ पहुंचे। उस समय उनको दर्द से इतना बेचैन देखकर इतना आश्चर्य होता था कि ऐसे धीर और वीर पुरुष दर्द से इतना व्याकुल क्यों हो रहे हैं। परन्तु पता चला की इस बेचैनी का कारण केवल पेट का दर्द ही नहीं था। परन्तु उन्हें यह ख्याल बेचैन किये हुए था कि जो मुसलमान व्याख्यान सुनने के लिए आये हुए हैं वह सब निराश होकर लौट जायेगे। उन्होंने डॉक्टरों से यही निवेदन किया कि उन्हें शीघ्र ही व्याख्यान देने के योग्य कर दे और डॉक्टरों के इंजेक्शन द्वारा इस योग्य कर दिया कि वह खड़े होकर व्याख्यान दे सके। उनका यह व्याख्यान आर्यसमाज के इतिहास में चिर स्थायी रहेगा। व्याख्यान क्या था शेर की गर्जना थी।

(सन्दर्भ–आर्यसमाज लुधियाना का सचित्र ५० वर्षीय इतिहास–बाबूराम गुप्त पृष्ठ संख्या ७)

5. पंडित लेखराम जी पर जब पत्थर फेंके गये : सन् १८६४ में करतारपुर, तब जालंधर के अंतर्गत आर्य समाज की स्थापना के समय पंडित लेखराम जी का व्याख्यान हो रहा था तो पौराणिकों ने उन पर पत्थरों से वर्षा आरंभ कर दी। इस पर पंडित लेखराम जी ने कहा कि मुझे यह पत्थर खाने में बड़ा आनंद आ रहा हैं। ऐसा भी समय आयेगा जब मेरे मिशन के प्रचारकों पर लोग फूल बरसायेंगे।

पंडित जी का कथन १६२१ में सही साबित हुआ जब सुदूर केरल में मोपला दंगों के समय आर्यसमाज द्वारा किये गये राहत और शुद्धि कार्य के कारण सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने आर्य समाज का खुले दिल से स्वागत किया था।

सन्दर्भ– आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सचित्र इतिहास– पंडित भीमसेन विद्यालंकार

6. हिन्दू कब सुरक्षित होंगे : पं०विष्णुदत्तजी ने अपने संस्मरण मे लिखा है कि पण्डित लेखराम जी कहा करते थे कि जब हिन्दू इतने दृढ़ हो जावेगे कि वे मुसलमान पुरुष या स्त्री को अपना सहधर्मी बना सकेगें तो वे सुरक्षित हो जावेंगे। वह अमृतसर के दरबार साहिब का उदाहरण दिया करते थे कि वहां मुसलमान रबाबी कई पीढ़ियों से गुरूग्रन्थ साहिब के भजन गाते हैं किन्तु फिर भी मुसलमान हैं, इसके विपरीत स्थिति में हिन्दू यदि किसी मस्जिद में प्रतिदिन दीपक जलाता हो या कुरान का पाठ करता हो तो सम्भव नहीं कि वह एक पीढ़ी में भी अपने धर्म पर टिका रहे। हिन्दुओं को कट्टरता अपनाने के साथ–साथ विधर्मियों के ग्रन्थों की कमियों का भी अध्ययन करना चाहिए।

7 दाढ़ी तो बकरे रखते है : एक बार घासीपुर जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र) के सब बड़े–बड़े चौधरियों ने मुसलमान बनने का निर्णय कर लिया। तिथि भी निश्चित हो गई। श्री पं०लेखरामजी को किसी ने सूचना दे दी। पण्डित जी भागदौड़ करके येन–केन प्रकारेण उसी दिन ठीक समय घासीपुर पहुंचे। मौलवियों का जमघट लगा हुआ था। अधिक यात्राओं के कारण पण्डितजी को हजामत का समय न मिला था जिससे उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। हांलाकि वे हमेशा केवल मूंछ रखते... थे। मौलवियों ने बड़ी दाढ़ी के कारण उनको भी मौलवी समझ अपने पास बिठाया और पूछा दाढ़ी तो हुई, ये मूंछे कैसे?

पण्डितजी हंसकर बोले दाढ़ी तो बकरों की होती है, मूछें सिह की होती है। मौलवियों के कान खड़े हो गये, तब तक पण्डितजी ने मंच पर चढ़कर अपना नाम बताया और शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और हमेशा की तरह पण्डितजी के सामने कोई टिक न सका। उनके भाषण सुनकर घासीपुर के सब चौधरी वैदिकधर्मी बन गये। मित्रो, जो घासीपुर मुसलमान होने जा रहा था वहीं पण्डितजी की वजह से गुरूकुल की स्थापना हुई।

8. पं० लेखराम और वेद में मांस भक्षण : पंजाब में जब मांस भक्षण के प्रश्न को लेकर एक विवाद बड़ी उग्रता से चल रहा था। पं० घासीराम जी कहा कि मांस खाने वाले कहते हैं कि वेदों में मांस खाने का विधान है। इतना सुनते ही पण्डितजी ने गुस्से से भरकर कहा जो ऐसा कहते हैं वे झूठ बोलते हैं। यदि कोई किसी प्रकार से मांस भक्षण का औचित्य सिद्ध कर दे तो मैं मांस इसी समय बाजार से मंगवा कर खाऊंगा। मित्रों, पण्डितजी की वेद–वाणी पर ऐसी अडिग श्रद्वा थी कि मांस–भक्षण जैसे निकृष्ट कर्म को भी करने को तैयार थे यदि कोई वेद से सिद्ध करके दिखा दे।

–संकलनकर्त्ता (डॉ. विवेक आर्य)

हम क्यों ...

7. गृहस्थी चक्र का प्रभाव– शिक्षा काल में घर में ही रहने से कुटुम्बियों की चिन्ता, रोग, शोक, लड़ाई और झगड़ों के प्रभाव से बच्चे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

8. फीस के बोझ का दबाव– स्कूल और कॉलेजों की भारी–भरकम फीस का जुटाना भी एक समस्या है। निर्धन ट्यूशन पढ़ा–पढ़ा कर उसे जुटाने का यत्न करते हैं।

9. सादे रहन–सहन का अभाव– विद्यार्थी काल में भी व्यवसाध्य भूषाओं का प्रचलन। स्कूलों तक तो निर्धारित वेश यूनिफार्म से कुछ सुविधा प्राप्त हो जाती है, किन्तु कॉलेज में पहुंचते ही यह बांध टूट जाता है और वहां का छात्र प्रतिदिन एक नई भूषा में श्रेणी में पहुंचता है। इससे असमर्थ छात्रों में हीनता और डाह के भाव जगकर सामाजिक जीवन को विषाक्त बनाते हैं।

10. अपव्यय– अध्ययन काल में ही फिजूलखर्ची का भाव बन जाता है। विशेषकर कॉलेज, हॉस्टलों में एक–दूसरे छात्र के कमरे में जाने पर कॉफी, चाय, जूस, पान, सिगरेट आदि पेश किये जाते हैं। अध्ययन काल में इस अपव्यय का अत्याचार अभिभावकों को सहना पड़ता है और बाद में यह स्वभाव उन्हें जीवन–भर दुःख देता है।

11. गुरु गौरव का अभाव– प्राचीन परम्परा में ईश्वर के बाद माता–पिता से भी बढ़कर गुरु के प्रति आदर के भाव होते थे। मनु ने गुरु को माता और पिता दोनों का समन्वित रूप बताकर आदेश दिया है कि उससे कभी द्रोह न करे, किन्तु आज की शिक्षा में यह भावना लुप्त हो गई है। अतः गुरु के आचार से प्रेरणा लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

12. देश सेवा की भावना का अभाव– पढ़ाई में जब फीस चुकाई जाती है तो उनके निर्माण में किसी का क्या एहसान है? अतः राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान के भाव जागृत ही नहीं होते।

13. आत्मसम्मान का अभाव– किसी प्रकार भी सही नौकरी प्राप्त करना ही परम लक्ष्य है। प्रार्थना–पत्र के नीचे 'मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट' लिखने में कोई संकोच नहीं होता। इतने पर भी नौकरी नहीं मिलती। हमारे अध्ययन काल में हास्य–रस के कवि हमारे एक साथी ने काशी में 1934 में एक कविता लिखी थी कि 'मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट लिखना बहुत पुरानी बात हो गई। अब इससे आगे पढ़कर लिखना चाहिए कि मोस्ट ओबिडियेन्ट हूं, आपके सर्वेन्ट के सर्वेन्ट का सर्वेन्ट हूं।' तब शायद नौकरी की कुछ आशा हो सकती है।

14. नास्तिकता– जो छात्रावासों और कक्षाओं का ढांचा है उसमें ईश्वर–भक्ति, आत्मिक चिन्तन का नितान्त अभाव है। अतः खाना–पीना और मौज उड़ाना यही जीवन का उद्देश्य बनता है। प्राचीन समय में यह विचारधारा 'पिब, भुङक्ष्व, रमस्व च (Eat, drink and be merry) राक्षसों की थी, आर्यों की नहीं। स्पष्ट है कि इस विपरीत चक्र को सुधारने का काम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

साभार गुरूकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

स्वाईन फ्लू का आयुर्वेद में आसान उपचार

नीम की छाल या पत्ते 100 ग्राम, गिलोय 100, तुलसी पंचांग (पत्ते) 50 ग्राम, दालचीनी 50 ग्राम, लौंग 25 ग्राम उपरोक्त औषधियों को मिश्रित कर पाउडर बना लें और पांच ग्राम पाउडर को चार कप पानी में उबालें जब एक कप रह जाए तो छानकर दिन में तीन बार बराबर मात्रा में प्रतिदिन पिलायें। बच्चों को आयु अनुसार दें। यदि उपरोक्त औषधियों की सामग्री बना कर घृत के साथ हवन करने से भी रोगी को लाभ प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को नीरोग रहने के लिए तथा वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना अत्यंत आवश्यक है। जो हमारी वैदिक संस्कृति का प्रतीक भी है। **–आचार्य बालकृष्ण**

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निद. शक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सानिध्य में दिनांक 11 से 19 अप्रैल 2015 तक निःशुल्क योग–ध्यान– साधना शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। डॉ॰ सुरेशजी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। **भारतभूषण आनन्द आश्रम प्रधान, मो॰ 09419107788**

महात्मा चैतन्यमुनिजी सम्मानित

आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम उधमपुर, जम्मू काश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर, ओड़िसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। आर्य समाज में उत्कृष्ट योगदान के लिए लाला लाजपत राय जी द्वारा स्थापित लोक सेवक मंडल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्य जी द्वारा प्रदान किया गया।

प्रैस सचिव

आर्य समाज मानसरोवर पार्क में 29वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज मानसरोवर पार्क में 29 वॉ वार्षिकोत्सव एवं ऋषि जन्मोत्सव दिनांक 23फरवरी से 25 फरवरी 2015 तक बड़े ही हर्षोल्लास उत्सह के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें ऋग्वेदीय यज्ञ के साथ भजन व प्रवचन हुए। महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस भी चौराहों पर प्रसाद व पुस्तक वितरण के साथ मनाया गया। अंतिम दिन– यज्ञ की पूर्णाहुति हुई इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रति. निधि सभा के युवा एवं यशस्वी महामंत्री श्री विनय आर्य जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहें। उन्होंने अपने उद्बोधन में पंच महायज्ञों के बारे में विस्तार से चर्चा की। अंत में समाज के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद शर्मा ने सभी उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया। **संदीप आर्य वेदालंकार, मंत्री**

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

23 मार्च से 29 मार्च 2015 तक, सानिध्यः पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, यज्ञ ब्रह्मा : पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, ध्यान योग साधना : आचार्य राजहंस मैत्रेय, प्रवक्ता : आचार्य खुशीराम जी, भजनोपदेशक : पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक झज्जर होंगे।

राजबीर जी आर्य, मो. 9811778655

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

डी॰ए॰वी॰ स्कूल व आर्य समाज जिला सभा कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती की पूर्व संध्या पर डी॰ए॰वी॰ स्कूल परिसर में स्थित यज्ञशाला में देवयज्ञ किया गया। इस यज्ञ में आर्य समाजों के प्रतिनिधि व विद्यालय के स्टॉफ तथा छात्र छात्राओं ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने देश में सर्वप्रथम नारी पाठशाला जालंधर में स्थापित की थी। साथ 17 फरवरी को महर्षि दयानंद बोधोत्सव भी समारोह पूर्वक मनाया गया।

आरविन्द पाण्डेय, सचिव

21 कुंडीय विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ धूमधाम से संपन्न

पहल ग्रुप एवं आर्य समाज इंदिरा. पुरम के संयुक्त तत्वावधान में 21 कुंडीय विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ मजार पार्क, केसिया रोड, शिप्रा सनसिटी, इंदिरापुरम गाजियाबाद में गुरूकुल नोएडा के प्राचार्य डा. जयेंद्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। दिल्ली से प्रधारे भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य एवं साथी कलाकारों द्वारा गाये गए ईश्वर भक्ति के गीतों ने समां बांध दिया। मुख्यातिथि के रूप में पधारे स्वदेशी आयुर्वेद के निदेशक डा. आ.के. आर्य एवं पार्षद श्री कपिल त्यागी ने कहा कि महायज्ञों से स्वाइन फलू जैसी घातक बीमारियों से बचा जा सकता है। **यज्ञवीर चौहान, मंत्री**

गुरुकुल वैदिक, आश्रम, वेदव्यास का 55 वाँ वार्षिक उत्सव सम्पन्न

राउरकेला (ओड़िशा), वैदिक संस्कृति, सम्भता का संरक्षण एवं वेदविद्या का प्रचार प्रसार में संलग्न गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला (ओड़िशा) का 55 वाँ वार्षिक ऋषिबोध महोत्सव एवं वेदपारायण महायज्ञ 16 से 18 फरवरी 2015 को हजारों लोगों की उपस्थिति तथा परिव्राजक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उन्होंने आर्य समाज, वेद, महर्षि दयानंद के निर्देशानुसार कार्य करने के लिए उपस्थितजनों को प्रेरित किया। भारतीय संस्कृति की रक्षा संस्कारों के द्वारा ही की जा सकती है। इसलिए अपनी संतान को वैदिक संस्कारों से संस्कारित करें।

–संयोजक, पं॰ धनेश्वर बेहेरा

गुरूकुल आश्रम आमसेना का 48वां वार्षिकोत्सव संपन्न

ओडिसा में आर्यों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गुरूकुल आश्रम आमसेना के 48वें वार्षिक महोत्सव पर दो होनहार युवक अंकित ब्रह्मचारी एवं बह्मचारी महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश धर्म के लिए समर्पित किया तथा श्री स्व. चौ. मित्रसेन जी आर्य की पुण्य स्मृति में पूज्य स्वामी सुधानंद जी सरस्वती, पूज्य डा. ब्रह्ममुनि जी वानप्रस्थी, महात्मा चैतन्यमुनि का सम्मान 21 हजार रू. की राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनंदन पत्र के साथ किया गया। इसी क्रम में 30 वानप्रस्थियों एवं 16 आर्य वृद्धों तथा गुरूकुल में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता–पिता का सम्मान भी किया गया। **डा. कुजदेव मनीषी**

चुनाव समाचार

आर्य समाज खलासी लाइन, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

प्रधान : श्री बारूराम शर्मा
मंत्री : श्री डॉ॰ राजवीर सिंह वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री रामकिशोंर सैनी

गिरिधारी लाल आर्य
महर्षि दयानंद संस्थान, कोटद्वार

अध्यक्ष : श्री सुरेंद्र लाल आर्य
सचिव : श्री वीरेंद्र देवरानी
कोषाध्यक्षः बच्चन सिंह गुसांई

आर्य समाज बिहारीपुर का 132 वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज बिहारीपुर का 132 वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव, सम्पन्न 15 से 21 फरवरी 2015 को गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियों ने यजुर्वेद यज्ञ सम्पन्न कराया। जिसमें विशाल वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रख्यात भजनोपदेशक भानु प्रकाश आर्य तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने कहा कि परिवार को श्रेष्ठ बनाना चाहते है तो वेद के वैज्ञानिक चिन्तन से जीवन को संस्कारवान् बनाना चाहिए।

...डा. श्वेत केतु

प्रवेश प्रारंभ

गुरूकुल में महर्षि कृत आर्ष पाठ विधि तथा राज.मा.शि. बोर्ड की दोनों पाठ विधि अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती हैं। कन्या गुरूकुल में भव्य छात्रावास, सुंदर यज्ञशाला, विद्यालय भवन अपना ट्यूबवैल, क्रीड़ा स्थल आदि की सुंदर व्यवस्था है। 3 मार्च 2015 से कक्षा 4,5, व 6 में प्रवेश प्रारंभ हो रहा है। आप अपनी सुपुत्री के उज्ज्वल भविष्य तथा सुसंस्कारों के लिये कन्या गुरूकुल में प्रवेश करायें। गुरूकुल में कम्प्यूटर लैब स्थापित है। हारमोनियम आदि वाद्य यंत्र, सिलाई कढाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। सरलतम विधि से वेदपाठ तथा 16 संस्कारों पर आधारित कर्मकांड तथा उपदेशिका एवं भजनोपदेशिका का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है। **–ऋतु आर्या, 919694892735, 8441087408**

शोक समाचार

महाशय श्री किशनलाल आर्य का निधन

महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से पोषित, धर्म धुरंधर, वैदिक मिशनरी, संवाहक, आर्य भजनोपदेशक, हिंदी रक्षा आंदोलन, गौरक्षा आंदोलन एवं शुद्धि आंदोलन के वीर सैनिक, वैदिक धर्म के उत्साही सिपाही महाशय श्री किशनलाल आर्य विद्यावाचस्पति का निधन 2 फरवरी 2015 दिन सोमवार प्रातः 9:30 बजे उनके निवास स्थान मथुरा में हो गया। इनकी आयु लगभग 71 वर्ष थी। अत्येंष्टि संस्कार ग्राम उंचागांव में पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

–सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 मार्च से रविवार 8 मार्च, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/6 मार्च, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 4 मार्च, 2015

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ प्रारंभ

नया बाजार लाहोरी गेट स्थित स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती बलिदान भवन में प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार को सायं 4:00 बजे यज्ञ किया जाएगा। आप सब इष्ट मित्रों सहित यज्ञ में उपस्थित हो यज्ञ, धर्म और वेद प्रचार में सहभागिता प्रदान करें। **श्री अरुण प्रकाश वर्मा**

11वें वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 11 वां वैवाहिक आर्य युवक–युवती परिचय सम्मेलन 3 मई 2015 को आर्य समाज विवेक विहार नई दिल्ली में आयोजित होगा। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य हो चुके पुत्र–पुत्रियों एवं संबंधियों का पंजीकरण अवश्य करवाएं। पंजीकरण की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है। रजिस्ट्रेशन फार्म **www.thearyasamaj.org** से भी डाउनलोड किया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन शुल्कमात्र –200 रुपये है। सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की भी सुविधा उपलब्ध होगी। **एस.पी. सिंह संयोजक, दिल्ली**

प्रतिष्ठा में,

बालिका आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज पंखा रोड,'सी'ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में लड़कियों के लिए आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर 23 मार्च 2015 से प्रारम्भ होने जा रहा है। यह प्रशिक्षण दिल्ली पुलिस द्वारा दिया जाएगा। 10 दिनों के लिए होगा जिसका समय दोपहर 2:30 बजे से सायं पाँच बजे तक होगा। इसमें प्रशिक्षण लेने वाली लड़कियों की उम्र 13 वर्ष या उससे अधिक होगी। इच्छित कन्यायें जल्दी अपना पंजीकरण करायें। केवल 50 कन्यायें ही पंजीकृत की जा सकेंगी। विशेष जानकारी के लिए श्री मंत्री अजय तनेजा तथा श्रीमती उमा मोंगा मो. 9212627283 (संयोजिका आर्य वीरांगना दल) **शिव कुमार मदान, प्रधान**

प्रेरणादायक कार्य मैं और मेरे पिताजी रोज सुबह मोटर साइकिल से दुकान जाते थे हर तीसरे दिन हमें कोई न कोई व्यक्ति अपनी मोटर साइकिल खींचता हुआ दिखता और मेरे पिता उनकी मदद के लिए रूक जाते और पैर लगाकर पेट्रोल पम्प या मैकेनिक तक छोड़ देते थे। मैं अपने पिता. जी को कहता कि क्यों समय बर्बाद करते हो और वे चुप रहते। इत्तफाक से एक दिन हमारी मोटर साइकिल भी बन्द हो गई, हम मुश्किल से रूके ही थे कि पीछे से एक सज्जन आए और बोले कि बैठिए मैं पीछे से पैर लगा कर पेट्रोल पम्प तक छोड़ देता हूँ। उस दिन मुझे पिताजी की चुप्पी का जबाव मिल गया। **अविचल आर्य**

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन – प्रतिरात्रि : 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार	– आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	(प्रेरक–प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार	– डॉ0 कमलेश कुमार अग्निहोत्री	(प्रेरक–प्रवचन)
प्रत्येक गुरुवार	–डॉ0 विनय विद्यालंकार	(व्यक्तित्व–विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार	– डॉ0 वागीश आचार्य	(प्रेरक प्रवचन)

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में गति

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कशमीर द्वारा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को गति देने हेतु कवायद प्रारम्भ कर दी गई। वर्षो से बन्द पड़ी आर्य समाज पंचतूत जिला जम्मू में सभा के पदाधिकारियों द्वारा सामूहिक यज्ञ कर स्थानीय लोगों को आर्य विचार धाराओं से जोड़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् सुरे चक (जम्मू) में बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए राहत सामग्री का आबंटन किया। **भारत भूषण आर्य, प्रधान**

बोधोत्सव संपन्न

आर्य समाज खलासी लाइन, सहारणपुर में बोधोत्सव पर विशेष यज्ञ श्रीमती मीना वर्मा जी द्वारा सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् आचार्य धीरज कुमार आर्य ने अपने प्रवचन में कहा कि महर्षि की हमारे उपर सबसे बड़ी कृपा है। उन्होंने अविद्या रूपी अन्धकार को हटाकर वेद ज्ञान दिया। भजनोपदेशक श्री मदनलाल आर्य ने ऋषि भक्ति से परिपूर्ण भजनों के माध्यम से श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। संचालन डॉ॰ राजवीर वर्मा व इसकी अध्यक्षता सत्यपाल चौहान जी ने की। **सुरेश कुमार सेठी**

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रेस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह